किये जा रहे हैं। जब कभी पकड़े जाते हैं ऐसे लोगों पर मुकदमा चलाया जाता है।

रेलगाड़ियों में सफर कर रहे यात्रियों से अतिरिक्त प्रभार वसूल किया जाना

1579. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि रेलगाड़ियों में चल टिकट परीक्षक और संवाहक टिकट बनाने को तैयार नहीं होते और जब तैयार होते हैं तो वे उन यात्रियों से एक बार फिर प्रभार वसूल करते हैं जिन्होंने अपनी पूरी यात्रा का ए० सी० सी० सुपर चार्ज पहले ही चुका दिया होता है और जिनके पास ऐसे टिकट भी होते हैं जिन पर ब्रेक जर्नी की अनुमति पहले से ही दी हुई होती है;

(ख) यदि हां, तो उसके क्या कारण है ;

(ग) क्या यह सच है कि रेलवे विभाग उन यात्रियों से भी आरक्षण प्रभार वसूल करता है जिनके नाम प्रतीक्षा सूची में रहते हैं और जब उन्हें आरक्षण नही मिल पाता तो उनके पास पैसा वापस लेने के लिए समय नहीं बचता है; और

(घ) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या उपचारी उपाय करने का विचार है ?

रेल मंत्री (श्री ए० बी० ए० गनी खान चौधरी) : (क) जी, नहीं।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

(ग) और (घ) केवल कुछ रेलों पर प्रतीक्षा-सूची वाले यात्रियों से आरक्षण प्रभार लिये जा रहे हैं। सभी रेलों पर समान प्रक्रिया लागू करने का प्रश्न विचाराधीन है।

वनस्पति घी की कीमतों में वृद्धि के लिये समझौता

1580. **श्री सत्य प्रकाश मालवीय :** क्या खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि मई, 1984 में वनस्पति घी के निर्माताओं के दो संघों अर्थात भारतीय वनस्पति उत्पादक संघ तथा वनस्पति निर्माता संघ और सरकार के बीच एक समझौता हुआ जिसके द्वारा एक जून, 1984 से वनस्पति घी की कीमतों में बढ़ौतरी कर दी गई ;

(ख) यदि हां, तो समझौते की शर्तें क्या हैं ; और

(ग) कीमतों में वृद्धि करने के क्या कारण हैं और समझौते में उपभोक्ताओं को क्यों नहीं शामिल किया गया ?

इलेक्ट्रानिकी विभाग में तथा खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय में उपमंत्री (श्री एम० एस० संजीवी राव) : (क) आयातित तेल के मूल्यों और वनस्पति के उत्पादन में प्रयुक्त निवेशों की लागत में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप वनस्पति के मूल्यों में 24 मई, 1984 से वृद्धि की गई है।

(ख) करार की शर्तों के अनुसार, पहली बार वनस्पति के विभिन्न पैकों के अधिकतम खुदरा मूल्य नियत किये गये हैं।